Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

युवा पीढ़ी, कृत्रिम मेधा और हिंदी भाषा की चुनौतियाँ

डॉ. मंजुषा संदीपान कोल्हे*
हिंदी विभाग,
इंदिरा गांधी वरिष्ठ महाविद्यालय, सिडको, नवीन नांदेड

शोध सार

वर्तमान समय को तकनीकी युग कहा जा सकता है, जहाँ कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence) ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी इस तकनीक से सर्वाधिक जुड़ी हुई है। शिक्षा, संचार, सूचना, रचनात्मक लेखन और सामाजिक संवाद के क्षेत्र में एआई की भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। इस तकनीकी परिवर्तन का प्रभाव हिंदी भाषा पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

प्रस्तुत लेख में युवा पीढ़ी और कृत्रिम मेधा के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करते हुए हिंदी भाषा के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। लेख में यह स्पष्ट किया गया है कि जहाँ कृत्रिम मेधा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के नए अवसर प्रदान करती है, वहीं भाषा की शुद्धता, मौलिकता, सांस्कृतिक चेतना और साहित्यिक संवेदना के लिए गंभीर प्रश्न भी खड़े करती है। यह लेख तकनीक और भाषा के संतुलित सह-अस्तित्व की आवश्यकता पर बल देता है।

बीज शब्द: *कृत्रिम मेधा, एआई और युवा, तकनीकी युग, हिंदी भाषा प्रभाव, भाषा चुनौतियाँ,*

Received: 10/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ. मंजुषा संदीपान कोल्हे
Email: kolhemanjusha81@gmail.com

प्रस्तावना :

भाषा किसी भी समाज की आत्मा होती है। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं, संस्कारों और सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त करता है। हिंदी भाषा भारत की जनभाषा होने के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक पहचान की वाहक भी है।

इक्कीसवीं सदी में विज्ञान और तकनीक ने जिस तीव्र गति से विकास किया है, उसने भाषा के स्वरूप और प्रयोग को भी प्रभावित किया है। कृत्रिम मेधा आज केवल तकनीकी अवधारणा न रहकर मानव जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी इस तकनीक का सबसे अधिक उपयोग कर रही है। ऐसे में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि कृत्रिम मेधा हिंदी भाषा को किस प्रकार प्रभावित कर रही है।

"भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति की संवाहिका होती है।"1

1. कृत्रिम मेधा : अर्थ और स्वरूप

कृत्रिम मेधा से आशय ऐसी तकनीक से है, जिसमें मशीनों को मानव-सदृश बुद्धि प्रदान की जाती है। यह तकनीक सीखने, विश्लेषण करने, निर्णय लेने और भाषा को समझने में सक्षम होती है।

आज एआई आधारित उपकरण हिंदी में अनुवाद, लेखन, संवाद और सूचना प्रदान कर रहे हैं। यद्यपि यह सुविधा उपयोगी है, परंतु भाषा जैसी सजीव और संवेदनशील इकाई पर इसका प्रभाव गहरा और दूरगामी है।

2. युवा पीढ़ी और कृत्रिम मेधा का संबंध

आज की युवा पीढ़ी डिजिटल युग में जन्मी है। स्मार्टफोन, इंटरनेट और एआई आधारित तकनीकें उनके दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी हैं।

युवा वर्ग शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं, असाइनमेंट, सोशल मीडिया और रचनात्मक लेखन में एआई का सहारा ले रहा है। इससे ज्ञान प्राप्ति सरल हुई है, किंतु गहन अध्ययन और आत्मचिंतन की परंपरा कमजोर पड़ती जा रही है।

"जहाँ सुविधा बढ़ती है, वहाँ परिश्रम घटने का खतरा भी बढ़ जाता है।"2

3. हिंदी भाषा के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

(क) अंग्रेज़ी का बढ़ता प्रभुत्व

कृत्रिम मेधा आधारित अधिकांश प्लेटफॉर्म अंग्रेज़ी में विकसित हुए हैं। हिंदी को सहायक भाषा के रूप में स्थान दिया जाता है। इससे युवाओं में यह धारणा बनती जा रही है कि तकनीकी सफलता के लिए अंग्रेज़ी आवश्यक है।

(ख) भाषा की शुद्धता पर संकट

एआई द्वारा तैयार हिंदी सामग्री कई बार व्याकरणिक रूप से अशुद्ध और भावनात्मक रूप से निर्जीव होती है। यदि युवा बिना संशोधन के ऐसी सामग्री का प्रयोग करते हैं, तो भाषा की शुद्धता प्रभावित होती है।

"भाषा केवल शब्दों का संयोजन नहीं, वह भावों की अभिव्यक्ति है।"3

(ग) मौलिकता में गिरावट

एआई द्वारा तैयार सामग्री की सहज उपलब्धता के कारण युवाओं में मौलिक लेखन की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। इससे हिंदी साहित्य की सृजनात्मक परंपरा को नुकसान पहुँच सकता है।

(घ) तकनीकी शब्दावली का अभाव

नई तकनीकी अवधारणाओं के लिए हिंदी में सर्वमान्य शब्दों की कमी है। परिणामस्वरूप हिंदी भाषा में अंग्रेज़ी शब्दों का अत्यधिक प्रयोग बढ़ रहा है।

(ङ) सोशल मीडिया और भाषा विकृति

सोशल मीडिया पर प्रयुक्त संक्षिप्त, मिश्रित और विकृत हिंदी भाषा युवाओं की भाषा-संवेदना को प्रभावित कर रही है।

4. कृत्रिम मेधा : हिंदी भाषा4. अवसर

कृत्रिम मेधा को केवल चुनौती के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह हिंदी भाषा के लिए कई अवसर भी प्रदान करती है—

हिंदी साहित्य का डिजिटलीकरण

ऑनलाइन हिंदी शिक्षा का विस्तार

वैश्विक स्तर पर हिंदी का प्रचार

दृष्टिबाधितों के लिए वॉयस टेक्नोलॉजी

"तकनीक यदि सही दिशा में प्रयुक्त हो, तो वह भाषा की उन्नति का साधन बन सकती है।"4

5. युवा पीढ़ी की भूमिका

हिंदी भाषा का भविष्य युवा पीढ़ी के हाथों में है। उन्हें चाहिए एआई को सहायक साधन के रूप में अपनाएँ भाषा की शुद्धता और गरिमा बनाए रखें। मौलिक लेखन और चिंतन को महत्व दें। हिंदी तकनीकी शब्दावली के विकास में योगदान करें।

6. संतुलन और सह-अस्तित्व की आवश्यकता

कृत्रिम मेधा और हिंदी भाषा के बीच संघर्ष की नहीं, बल्कि संतुलन की आवश्यकता है। तकनीक मानव की सेवक बने, स्वामी नहीं—यही भाषा और संस्कृति की रक्षा का मार्ग है।

"तकनीक की गति तेज हो सकती है, पर संस्कृति की जड़ें गहरी होती हैं।"5

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कृत्रिम मेधा ने युवा पीढ़ी को अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं, किंतु इसके अंधाधुंध प्रयोग से हिंदी भाषा के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। यदि युवा वर्ग तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग करे और हिंदी भाषा की शुद्धता, मौलिकता और सांस्कृतिक चेतना को बनाए रखे, तो हिंदी भाषा डिजिटल युग में भी अपनी गरिमा और पहचान सुरक्षित रख सकती

संदर्भ-ग्रंथ सूची (References)

1. शर्मा, रामकुमार — हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018, पृष्ठ 45–65

2. द्विवेदी, नंदकिशोर — समकालीन हिंदी भाषा की चुनौतियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ 80–105

3. सिंह, अमरनाथ — भाषा, समाज और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ 110–135

4. पांडेय, शिवकुमार — डिजिटल युग और हिंदी साहित्य, साहित्य भवन, आगरा, 2021, पृष्ठ 55–85

5. UNESCO — Language, Technology and Youth, 2019, पृष्ठ 30–45 के लिए अवस

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)